INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2023

खातुल - विस्थपित नारी का चित्रण

गिरी दीपा व्यंकटगीर
सहशिक्षिका, जि. प. हायस्कुल, वडेपुरी, ता. लोहा, जि. नांदेड.

आधुनिक हिन्दी कथा लेखिकाओ मे मंजुल भगत की अपनी विशिष्ट पहचान है । मंजुल जी ने जो कुछ अपने आस-पास देखा और जिया उन अनुभुतियों को शब्दो मे ढालकर अपनी रचनाओ मे चित्रित किया है । उनकी यह अनुभुतियां सर्वव्यापक धरातल पर पाठक के मर्मस्थल तक पहुंचनेवाली है । उन्होने उपने समय को बडे ही बेबाक ढंग से अपने साहित्य मे समेटा है । जिसमे उनका उपन्यास घ्खातुङ अपने आप मे विशिष्ट रचना है । मंजुल भागत ने अपने इस उपन्यास से एक नयीविषयवस्तू तथा नयी भावभूमि को पाठाको के समक्षरखा है । अफगानिस्तान पर रूसी आक्रमक के बाद दिल्लीमे आकर बस गए अफगान पयासी परिवारो और विस्थापितो के जीवन को लेकर लिखा गया यह उपन्यास है। हिन्दी मे यह इस भावभूमि को पहला उपंन्यास है, जो अफगान समाज का चित्रण करता है । इस प्रकार मंजूल भगत नयी विषय वस्तू को अविष्कृत करके उसम मानवीय संवेदनाओ, चिन्ताओ और संभावनाओ को जीवंत रूप देने मे सफल होती है । इस तरह एकदम नये तथा भिन्न विषयवस्तू को लेकर लिखा गया यह उपन्यास है जिसमे राजनिति की तनिक भी गंध नही है । इसमे अफगान प्रवासी परिवारो और विस्थापितो का चित्रण है, जो अफगानिस्तान पर रूसी आक्रमण के बाद हिंदुस्तान मे, दिल्ली मे आकर बस गए है । इन्ही मेसे खातूल और परिवार भी एक है जो लखिका के घर के सामने ही रहते है । खातुल उपन्यास की नायिका है खातूल, एक अफगान सुंदरी जो काबुल से भागकर आई है । इसके मॉ, बाप, भाई, काबुल मे ही रह गए थे । उसके पिता डॉक्टर और माँ नर्स है, जिनकी रूसियो को जरूरत थी । उसका छोटा भाई एकसान भी अपने माता-पिता के साथ रूसियो का कैदी बन चुका था । अपने वतन से भागकर अपने कुछ रिश्तेदार के साथ खातुल दिल्ली पहुच पाई थी । जिनमे उसकी खाला मलाईजान और उनकी दो लडकीया अंगामा और ओसाय है । वे लोग वीसा के लिए अमेरिकन दूतावास के चक्कर काटने लगे । उसके संगी-साथीके वीसा मिल गया था, पर खातुल को नाही मिल रहा था । इसका कारण था कि अमेरिका मे खातुल को कोई सगा भाई था बहन नही ह, जो कि उसे स्पांसर कर सके ।

खातुल की यह त्रासदी है कि उसके सारे रिश्तेदार अमेरिका चले जान के बाद उसका यहाँ भी कोई नही रहेगा। खातुल या तो आपनी मातृभूमि बाकूल वापस जाना चाहती ह या फिर पाकिस्तान मुजाहिद्दीन बनकर जाना चाहती है किंतू लेखिका खातुल को लकर चिंतित हो उठती है । लेखिका का यह प्रश्न कि अकेली जवान लडकी वहाँ कैसी रहेगी ? पर खातुल का उत्तर संपुर्ण विस्थापित नारियों की विडंबना ओर घेर त्रासदी को स्पष्ट करता है कि, अकेली जवान लडकी कहाँ महफुज है, आंटी ? अकेली नारी के सुरक्षित होने पर प्रश्नचिन्ह लगता यह यथार्थ माने इतकनी कम उम्र मे ही खातुल को समझ मे आ चुका था । अकेली नारी चाहे वह संसार के किसी भी कोने मे रहे, उसकी सुरक्षा का सवाल हर कही समान है, इसी मानसिकता से गुजरती है खातुल । वह अकेली अपने वतन, माता-पिता, भाई को छोडकर रहना नही चाहती किंतू युध्द की बर्बरता न उसे परिवार के साथ रहने देती है, न अकेली ।

मलाईजान के दो देवर, आफताब और इरुनम भी अमेरिका मे पुनर्वास के सपने संजोढ किसी तरह भारत पहुंच गए थे । वे सब लोग मिलजुलकर रहने लगे । खातुल के ये रिश्तेदार अपने भविष्य के प्रति चिंतित समझौतावादी है । पर खातुल इन सारी परिस्थितीयो से समझौता नही करना चाहती थी । एक रोज खातुल के घर उसके रिश्तेदारो की छोटीसी ठोली आ पाहूँची जिसमे उसका मामी, नानी दुसरी खाला खलिदा खाला की बेटी खुरशीद और उसका चार वर्ष

का बेटा गारजाय काबुल से आए थे । खातुल उसकी नानी के हाथे से खातुल को खत भेजा था । उसके लिखा था कि खातुल अब उन लोगो से कभी मिल पाने का खयाल आपने दिल से निकाल दे । खातुल को चाहिए कि वह पुरी तरह से अपने मौसियों के परिवार से घुलमिल जाए । उनकी मर्जी से शादी करले । खातुल उस पत्र को पढ कर जोर-जोर से राने लगी । उसे ए ैसा लगा माने एक झटके के साथ उसकी माँ ने उससे आपनी नाल कॉट ली । अपने माता-पिता से अलग होने की कल्पना मात्र से ही टुट सी गई ।

खातुल का सारा परिवार अपने वतन वापस लौटले की उम्मीद छोड चुका था । अपने पुर्नवास के लिए अमेरिकन दूतावास के वीसा प्राप्ती के लिए चक्कर काटने लगे । खातुल को भी वीसा प्राप्त हो सकता था अगर वह किसी अमेंरिकन वीसा-प्राप्त अफगानी से विवाह कर ले, तो वह उसकी पत्नी बनकर अमेरिका जा सकती हे । मलाईजान के देवर आफताब और खातुल के रिश्ते से खातूल के सारे परिवार की रजामंदी थी । पर खातूल अपने माता पिता के साथ आशिर्वाद से सही अपनी नयी जिंदगी की शुरूवात करना चाहती थी । पर सभी खातुल को समझाते है कि, यह जग है, जंग मे कुछ भी हो सकता है । पर खातुल का जवाब था, तो, मै थी इस जंग मे शामिल हूगी ।

लगभग चार महीने बाद खुरशीद का पति काबुल से आया और अचानक उन लागो ने छोटे-छोटे जत्थे कें भारत छोडता शुरू किया । नानी, खुरशीद, उसका पति, माँ खालिदख्ज और गारजाय पहले जत्थे मे रवाना हो गए । दूसरे जत्थे मे मलाईजान, ओसाय और अंगोमा ने प्रवास किया । मामा ने कई चक्कर खातुल को लेकर अमेरिकन दुतावास के लगाए । फिर खातूल को रहले का इंतजाम वीसा मिलने तक लडकियो के होस्टेल में करके, इरु ाम के साथ अमेकिरा चले जाते है । आफताब खतुल के साथ रूक जाता है । खतुल बीच-बीच मे लेखिका से मिलने तथा अपनी डाक लेने आती रहती है । बातो ही बाते मे लखिका जान गई कि खातुल अब धीरे-धीरे आफताब की और आकर्षित हो रही है । और कुछ ही दिनो मे आमेरिका से खतो का भारी-भरकम पुलिंदा आता है ।खालाओ द्वारा भेजी तस्वीरो को देख वह खुश हो जाती है । उनके द्वारा लिखे पत्रो मे खातुल को भी जल्द से जल्द अमेरिका आने बारे मे लिखा जाता है । उन पत्रो को पढकर खातुल सभी से मिलेन के लिए उतावली हो उठती है । वह अमेरिकन दुतावास जाकर वीसा प्राप्ती की कोशीश भी करती है । वह परिस्थिती से समझौता करने के लिए तैयार हो जाती है । अकेली वह अपनो से दूर नही रह सकती इस बात को वह समझ जाती है । साथ ही उसका यह निर्णय उसकी मानसिक अंतर्दशा का चित्रण करता है, जहाँ परिस्थिती के आगे वह घुटने टेक देती है । अपने माता-पिता, भाई और वतन को भुला वह नई जिंदगी की शुरूआत करना चाहती है इससेबडी पीडा और यातना और क्या होगी ?कुछ ही दिनो मे उसे वीसा भी मिल जाता है और वह पुरे उमंग और जोश से अमेरिका जाने की तैयारी करने लगती है । उसकी आँखो के सामने वहाँ के घर की तस्वीरे साफ दिखाई जाने की तैयारी करने लगती है । उसकी आँखो के सामने वहाँ के घर की तस्वीरे साफ दिखाई दे रही थी । वह खाला, नाती और खुरशीद सभी के नाम लेती जाती है । लेखिका महसूस करती है कि, रूक रूक कर पुकारे गए नामो के बीच कुछ अनचाहे रिश्ते जिन्हे वह इतना इतना उच्चार चुकी थी कि कुछ सुस्ता लेना चाहती थी । उसके दिलो दिमाग के ,खाली गोशे, जिनमे उसने उन रिश्तो को जिंदा चिन दिया था, कब्रिस्तान गए थे । 5 हालातोसे समझोता कर खातुल अपने भविष्य की और कदम बढाती है ।

खातुल एक ऐसी विस्थापित युवती है, जो अपनी जडो को अपनी मिट्टी से उखडने नही देना चाहती । खातूल की सबसे बडी त्रासदी यह है कि वहअपने मुल्क, माता-पिता, भाई से दूर जा पडी है । उसका इन सबके प्रतिअपार प्रेम और संवेदना पाठको को कही भीतर तक झकझोर देता है । पर अंत मे वह भी दुसरो जैसे परिस्थितीयो से समझौता कर लेती है । उसने जंग देखी, ही उससे उपस्थित परिस्थितियों को शिकार वह हुई है । और शायद यही कारण है कि, हर खानाबदोश से खातुल को प्यार है । उसका दुलारा, गली का छकिचाचा फकीर कुत्ता शैबी भी, भरा-पूरा व्यक्तित्व लिए एक विशेष चरित्र के रूप मे सामने आया है । मंजूलभगत ने खातुल को ऐसे चरित्र के रूप मे चित्रित किया है जहाँ उसकी संवेदना भावनाए, प्यार और हमदर्दी केवल मनुष्य मात्र तक सीमित नही तो वह शैबी जैसी कुतते को उसका हिस्सा बना लेती है ।

इस तरह एकदम नये तथा भिन्न विषयवस्तू को लेकर, जिसमे रख्ज्ञनीति की तनिक भी गंध नही । भावनाओ से सरोबार लिखा गया यह उपन्यास लेखिका की रचना सामर्थ्य का परिचायक है । किसी भी राजनीतिक विचारधारा काम माउथपीस बने बगैर राजनीतिक परिणामी व स्थितीयो को भावनाओ के स्तर पर तोलते और झेलते हुए यह उपन्यास लिखा गया है । अपनी जमीन से उखडे-ख्देडे हुए ु तिर-बितर अफगान परिवारो की समस्याओं को समझते की एक ईमानदार कोशिश 7 नायिका खातुल के माध्यम से इस नयी भावभूमि को द्वारा मानवीय संवेदनाओ और संभावनाओ का सफल चित्रण इस उपन्यास मे हुआ है । विस्थापित खातुल की मनोदशा और संघर्ष को लेखिका ने वडी ही जीवंत तथा मार्मिक अभिव्यक्ती दी है ।

संदर्भ सुची :-

1) मंजूल भगत समग्र कथासाहित्य (1) स कलम किशोर गोयका पृ. 8
2) खातुल, मंजुल भगत पृ. 16
3) वही पृ. 36
4) वही पृ. 39.
5) वही पृ. 80.
6) खातुल मंजुल भगत आवरण पृष्ठ से.
7) खातुल मंजुल भगत आवरण पृष्ठ से.